Chapter 5

BSEB class 9th hindi notes – मूक से सवाक फिल्मों तक

लेखक – परिचय
-अमृतलाल नागर

भारतीय : मूक से सवाक फिल्मों तक

अमृतलाल नागर का जन्म आगरा जिला के गोकुलपुरा में 17 अगस्त , 1916 ई . को हुआ । गोकुलपुरा उनका ननिहाल था । वे मूलत : गुजराती ब्राह्मण थे । उनके पितामह पंडित शिवराम नागर 1895 ई . में लखनऊवासी हो गए थे । जब नागरजी 19 वर्ष के थे तभी उनके पिता का देहात हो गया । अर्थोपार्जन की विवशता के कारण उनकी विधिवत शिक्षा हाई स्कूल तक ही हुई , किंतु निरंतर स्वाध्याय द्वारा साहित्य , इतिहास , पुराण , पुरातत्व , समाजशास्त्र , मनोविज्ञान आदि विषयों पर तथा हिंदी , अंग्रेजी , मराठी , बंगला आदि भाषाओं पर अधिकार प्राप्त किया । एक छोटी – सी नौकरी के बाद कुछ समय तक मुक्त लेखन एवं हास्यरस के प्रसिद्ध पत्र ' चकलस ' के संपादन के अनंतर 1940 ई . से 1947 ई . तक कोल्हापुर , मुंबई एवं चेन्नई के फिल्म क्षेत्र में लेखन कार्य किया । 1953 ई . से 1956 ई . तक वे आकाशवाणी , लखनऊ में ड्रामा प्रोड्यूसर के पद पर रहे । तदुपरांत वे स्वतंत्र लेखन करते रहे और हिंदी साहित्य में अपनी स्थाई पहचान बनायी ।
अमृतलाल नागर हिन्दी के गंभीर कथाकारों में संभवतः सर्वाधिक लोकप्रिय हैं । इसका अर्थ यह है कि वे विशिष्टता और रंजकता दोनों तत्वों को अपने कृतियों में समेटने में समर्थ हुए हैं । वे आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख कथाकार , विचारक एवं अनुवादक थे । साहित्य की अनेक विधाओं – कहानी एवं रेखाचित्र , उपन्यास , रिपोर्ताज , भेटवार्ता एवं संस्मरण , अनुवाद में उनका अवदान महत्वपूर्ण है । उन्होंने विशाल साहित्य की रचना की है जिसमें वस्तु – भाव , भाषा शिल्प आदि के धरातल पर प्रयोगों और नवाचारों की बहुलता है । साहित्य – लेखन के अतिरिक्त मुम्बई एवं चेन्नई के फिल्म क्षेत्र में लेखन – कार्य एवं ड्रामा प्रोड्यूसर के रूप में अपनी सर्जनात्मकता को विस्तार दिया है । निरन्तर स्वाध्याय द्वारा इतिहास , पुराण , पुरातत्व , समाजशास्त्र , मनोविज्ञान विषयों पर तथा हिन्दी , गुजराती , मराठी , बंगला एवं अंग्रेजी भाषा पर अधिकार प्राप्त करने के कारण ही वे अच्छे अनुवादक के रूप में दिखाई पड़ते हैं । गूढ़ और विदग्ध हास – परिहास तथा व्यंग्य से परिपूर्ण अपनी कलात्मक भाषा शैली को देखते हुए अपने समय के रचनाकारों में विशिष्ट हैं।

कहानी का सारांश

' भारतीय चित्रपट : मूक फिल्मों से सवाक् फिल्मों तक ' शीर्षक निबंध प्रसिद्ध साहित्यकार अमृतलाल नागर के निबंध – संग्रह ' फिल्म क्षेत्रे रंग क्षेत्रे ' से लिया गया है । अमृतलाल नागर हिंदी के युग प्रवर्तक साहित्यकार होने के साथ – साथ फिल्म लेखन से भी जुड़े थे । इस निबंध में भारतीय फिल्म के उद्भव और विकास की कथा कही गई है ।

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दियों में कई बड़े आविष्कार हुए जिनकी पहले कोई कल्पना नहीं कर सकता था । ऐसा ही एक अविष्कार था फिल्म । फिल्म के आविष्कार ने मानव जीवन में हलचल मचा दिया । 6 जुलाई 1896 को भारत में पहली बार फिल्म प्रदर्शन मुम्बई में हुआ । इससे जनता के बीच तहलका मच गया । उस समय इसका टिकट एक रुपया था । इसे देखने वालों को कौन कहे इसके बारे में सुनने वालों के भी रोमांच का ठिकाना नहीं था । उस समय की फिल्म आज की फिल्मों की तरह कहानी पर आधारित नहीं होती थी । उसमें छोटी – छोटी तस्वीरें होती थी , किसी में समुद्र स्नान के दृश्य दिखलाए जाते थे तो किसी में कारखाने से छूटते हुए मजदूरोंका दृश्य रहता था । लोग यह देखकर अचंभा में पड़ जाते थे कि तस्वीरें भी चलती – फिरती और नाचती हैं ।

1897 में पहली बार मुम्बई की जनता को फिल्म में कुछ भारतीय दृश्य देखने को मिले । उस जमाने में फिल्मों को वायोस्कोप कहा जाता था ।
भारत में फिल्म निर्माण का काम शुरू करने वाले पहले व्यक्ति सावे दादा थे । अमृतलाल नागर उनसे 1941 में

https://www.evidyarthi.in/

कोल्हापुर में मिले थे । उनका कद गोरा चिट्टा था । वे दुबली – पतली काया वाले व्यक्ति थे । वे एक बड़े कैमरामैन और भारतीय फिल्म व्यवसाय के आदि पुरुष थे । उन्होंने ल्युमीयर ब्रदर्स के प्रोजेक्टर , फोटो डेवलप करने की मशीन का भारतीयकरण कर लिया था । उन्होंने कब्रिज विश्वविद्यालय के प्रथम भारतीय छात्र तथा लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति आर . पी . परांजपे , लोकमान्य तिलक गोखले आदि पर फिल्में बनाई थीं ।
ययय दादा साहेब फाल्के भारतीय फिल्म उद्योग के जनक माने जाते हैं । उनके द्वारा बनाई गई फीचर फिल्म ' राजा हरिश्चन्द्र ' से पहले एक ' भक्त पुंडलीक ' नामक फीचर फिल्म बनी थी । ' राजा हरिश्चंद्र ' में स्त्रियों का पार्ट पुरुषों ने ही किया था । शुरू में भारतीय फिल्म पौराणिक कथानक पर ही बनी । धीरे – धीरे उनके कथानक में विस्तार हुआ । 1930 में पहली बोलने वाली फिल्म ' आलम आरा ' बनी । यहाँ से भारतीय फिल्मों में नया युग आया ।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/